सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर जुलाई माह का परिचय

ईशा सरदेसाई द्वारा लिखित

सिद्धयोग पथ पर, जुलाई का माह विशेष तौर पर, गुरुपूर्णिमा महोत्सव के साथ जुड़ा हुआ है। मैं "विशेष तौर पर" इसलिए कह रही हूँ, क्योंकि गुरुपूर्णिमा चान्द्रतिथि के अनुसार मनाया जाने वाला पर्व है जो कि भारतीय पंचांग के अनुसार आषाढ माह की पूर्णिमा पर आता है, और पश्चिमी कैलेण्डर के अनुसार यह प्रायः जुलाई माह में पड़ता है। २०२६ के इस वर्ष में गुरुपूर्णिमा २९ जुलाई को है।

आप सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर गुरुपूर्णिमा की कहानी पढ़ सकते हैं कि इस पर्व का आरम्भ कैसे हुआ जिसकी गहरी जड़ें भारतीय संस्कृति में निहित हैं। यहाँ मैं इस कहानी का सारांश भर प्रस्तुत कर रही हूँ। गुरुपूर्णिमा वह पर्व है जिसका आरम्भ महर्षि वेदव्यास जी के शिष्यगण ने सहस्रों वर्षों पूर्व किया था। वेदव्यास जी के शिष्यगण ने अपने गुरुदेव के समक्ष यह इच्छा प्रकट की कि वे उनका सम्मान व पूजन-वन्दन करना चाहते हैं, कि वे अपनी अतिशय कृतज्ञता को अभिव्यक्त करना चाहते हैं। अपने शिष्यों के प्रति करुणावश, महर्षि वेदव्यास जी ने उनसे कहा कि वे वर्ष का एक दिन चुनकर, उसे विशेषरूप से श्रीगुरुपूजा के लिए समर्पित कर सकते हैं। शिष्यों ने तुरन्त ही प्रसन्नतापूर्वक आषाढ माह की पूर्णिमा को चुना। तभी से यह तिथि गुरुपूर्णिमा के नाम से जानी जाने लगी।

सिद्धयोगीजनों और नए साधकों के लिए, गुरुपूर्णिमा का दिन, बल्कि इस पर्व के आस-पास का पूरा माह ही, सिद्धयोग परम्परा के श्रीगुरुओं का पूजन-वन्दन करने का समय है : यह समय है गुरुमाई चिद्विलासानन्द के पूजन-वन्दन का, बाबा मुक्तानन्द के पूजन-वन्दन का और भगवान नित्यानन्द के पूजन-वन्दन का। हम अपने श्रीगुरुओं का सम्मान, उनका पूजन-वन्दन *कैसे* कर सकते हैं, इसे बेहतर रूप से समझने के लिए, हम हमेशा की तरह, सिद्धयोग पथ की वेबसाइट देख सकते हैं।

इसे आरम्भ करने का एक अच्छा तरीक़ा है, गुरुपूर्णिमा-दक्षिणा अर्पित करने के लिए आमन्त्रण-पत्र पढ़ना जिसे सुश्री लीलावती स्टूअर्ट सट्क्लिफ़ ने लिखा है [हालाँकि, सच कहूँ तो सिद्धयोग पथ की वेबसाइट के होमपेज पर आप *कहीं भी* क्लिक करेंगे तो वह आरम्भ करने का 'अच्छा तरीक़ा' ही

होगा]। सिद्धयोग महोत्सवों को मनाने हेतु हमारे पास अभ्यासों के अनेक विकल्प हैं, जिनमें से हम अपने लिए कोई विशिष्ट अभ्यास चुन सकते हैं और यही बात मेरे लिए उन अभ्यासों को इतना आनन्दपूर्ण व रोचक बनाती है। तथापि, कभी-कभी कोई एक ऐसा अभ्यास होता है जिस पर हम किसी विशिष्ट महोत्सव पर विशेष रूप से केन्द्रण करते हैं। गुरुपूर्णिमा पर्व के लिए हम दक्षिणा के अभ्यास पर केन्द्रण करते हैं। [यदि आप दक्षिणा के विषय में अधिक जानना चाहते हैं या इस अभ्यास के बारे में अपनी समझ को अधिक गहरा बनाना चाहते हैं तो आपको सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर इससे सम्बन्धित सामग्री मिल जाएगी—उदाहरण के लिए, सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर, एक सिद्धयोग विद्वान द्वारा लिखित एक व्याख्या दी गई है और दक्षिणा के विषय पर एक सिद्धयोग स्वामी जी के साथ प्रश्नोत्तरी भी प्रकाशित है।]

वहाँ से हम अपना केन्द्रण ला सकते हैं, 'श्रीगुरु-उपासना' पर। अब, सबसे पहले तो मैं यह कहना चाहती हूँ कि वेबसाइट पर शब्दों के इस नए संकलन के बारे में आपको बताने के लिए मैं *बड़ी उत्सुकता से* प्रतीक्षा कर रही थी। मुझे बेहद ख़ुशी हो रही है कि वह पल आ ही गया!

तो बात ऐसी है कि गुरुपूर्णिमा माह के आगमन की प्रत्याशा में, मैं कुछ सप्ताह पहले अपने कुछ सह-सेवाकर्ताओं से मिली। हम सभी को शब्दों से बहुत प्रेम है और मेरे सह-सेवाकर्ता संस्कृत जैसी भारतीय भाषाओं के विद्वान हैं। हमने यह तय किया कि श्रीगुरुमाई के प्रति एक अर्पणस्वरूप हम 'गुरु' से सम्बन्धित कुछ संस्कृत शब्दों का चयन करेंगे और साथ ही उनका अंग्रेज़ी अनुवाद भी प्रस्तुत करेंगे। इनमें से अनेक शब्द भारत के शास्त्रों में पाए जाते हैं। इनमें से कुछ शब्द श्रीगुरु के स्वरूप का वर्णन करते हैं या फिर श्रीगुरु से सम्बन्धित किसी विशिष्ट पक्ष का। कुछ शब्द यह बताते हैं कि श्रीगुरु शिष्य को क्या प्रदान करते हैं। और कुछ शब्द इस बात को समझाते हैं कि श्रीगुरु के प्रति शिष्य का कैसा भाव होना चाहिए, शिष्य को कौन-से कार्य-प्रयास करने चाहिए, कौन-से अभ्यास करने चाहिए।

मैंने अनेक बार देखा है कि जब भी कोई व्यक्ति गुरुमाई जी को कोई भेंट अर्पित करता है तो वे इसका ध्यान रखती हैं कि वह उपहार सिद्धयोग संघम् के साथ किस प्रकार साझा किया जा सकता है। आपको शायद याद होगा कि मैंने पहले भी इस बारे में लिखा है कि लगभग दस वर्ष पहले, कैसे मैंने सिद्धयोग पथ की वेबसाइट के लिए लिखना शुरू किया था। मैं गुरुमाई जी को पत्र लिखा करती थी जिनमें मैं साधना सम्बन्धी अपने अनुभव और अन्तर्दृष्टियाँ उनके साथ साझा करती। मेरे पत्रों को पढ़ने के बाद गुरुमाई जी ने मुझसे कहा कि मैं अपने चिन्तन-मनन आप सभी के साथ साझा करूँ! [उस लेख को आप इस लिंक पर पढ़ सकते हैं, जिसका शीर्षक है 'कृतज्ञता, कृतज्ञता

का स्वरूप ♡' : https://www.siddhayoga.org/2025/november/nature-of-gratitude/exposition/]

अब गुरुपूर्णिमा के विषय पर लौटते हैं—मैंने और मेरे सह-सेवाकर्ताओं ने मिलकर संस्कृत के शब्दों के रूप में जो भेंट बनाई थी, उसे जब हमने गुरुमाई जी को अर्पित किया तो उन्होंने बड़ी कृपापूर्वक हमारे कार्य की सराहना की और इस बात पर ग़ौर किया कि हरेक शब्द जो हमने चुना है, वह श्रीगुरु को, शिष्य को और गुरु-शिष्य के सम्बन्ध को कितनी गहराई से और कितने सार्थक रूप से दर्शाता है। फिर गुरुमाई जी ने कहा कि यदि सभी सिद्धयोगी व नए साधक इन शब्दों के बारे में सीख सकें तो यह बहुत लाभदायक होगा। इसलिए, पूरे जुलाई माह के दौरान, हर दिन, इन शब्दों में से एक शब्द सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर पोस्ट किया जाएगा।

जैसा कि शीघ्र ही स्पष्ट हो जाएगा, ये सभी शब्द, 'गुरु' शब्द से आरम्भ होते हैं [या फिर, स्पष्ट तौर पर कहें तो 'श्रीगुरु' से, जब हम उन्हें आदरसूचक 'श्री' के साथ लिखते हैं]। ये शब्द, संयुक्त या सामासिक शब्द हैं, अर्थात् ये स्वतन्त्र शब्दों को जोड़कर बने हैं और हर संयुक्त शब्द का पहला भाग दर्शाता है, 'गुरु' को। जब मैं और मेरे सह-सेवाकर्ता इस संकलन पर कार्य कर रहे थे तो मुझे एक सुप्रसिद्ध उपमा याद आ गई जो गुरुमाई जी और बाबा मुक्तानन्द ने सत्संगों में दी है। गुरुमाई जी और बाबा जी यह बताया करते कि ऐसा समझा जा सकता है कि एक व्यक्ति के जीवन में जो कुछ भी है, वह एक 'शून्य' के समान है। उस व्यक्ति के पास बहुत-सी चीज़ें हो सकती हैं; परन्तु उसका अर्थ यही होगा कि उसने बहुत सारे शून्य ही एकत्र किए हैं! तथापि जब, उसे श्रीगुरु मिलते हैं और वे उसके अन्दर आत्मज्ञान को जगाते हैं तो यह उन सभी शून्यों के आगे अंक '१' लगा देने जैसा हो जाता है। तब उन शून्यों को वास्तव में अर्थ मिलता है और उनका मूल्य बढ़ जाता है।

यह तो मैंने संक्षेप में एक झलक मात्र दी है, बस कुछ ही विचार व्यक्त किए हैं कि गुरुपूर्णिमा के माह में सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर क्या-क्या मिलेगा। सच बताऊँ तो आपके लिए अध्ययन-सामग्री के रूप में जो विशाल भण्डार उपलब्ध है—सिखावनियाँ, लेख, कहानियाँ, स्तोत्र, तस्वीरें और भी बहुत कुछ—उसकी मैंने आपको छोटी-सी झलक ही दिखाई है। मैं आपको प्रोत्साहित करती हूँ कि पूरे जुलाई माह के दौरान, आप स्वयं इन सभी का अन्वेषण करें—वेबसाइट पर जाकर उन पृष्ठों को देखें जो गुरुपूर्णिमा का महोत्सव मनाने के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए हैं।

ऐसा करने के अनेकानेक लाभ हैं। इन लाभों को गिनाने के लिए तो मैं अलग से एक पूरा लेख लिख सकती हूँ! तथापि, एक बार फिर, मैं उनमें से कुछ मुख्य लाभों के बारे में बता रही हूँ। मेरी दृष्टि में, सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर दी गई सिखावनियों के साथ सक्रियता से कार्य करना, एक ऐसा

साधन है जिसके द्वारा हम अनादिकाल से चली आ रही गुरु-शिष्य परम्परा का एक भाग बन जाते हैं। इस परम्परा के अन्तर्गत श्रीगुरु अपने शिष्य को ज्ञान प्रदान करते हैं और शिष्य उस ज्ञान को ग्रहण कर, अमल में लाता है—यही इस परम्परा का आधार है जो इसे जीवन्त रखता है। श्रीगुरुमाई, वेबसाइट के माध्यम से हर दिन अपनी सिखावनियाँ प्रदान करती हैं। और हर दिन हम यह निर्णय ले सकते हैं कि हम इन सिखावनियों का अध्ययन करें, इनका अभ्यास करें, इन्हें आत्मसात् करें व अपने जीवन में इनका परिपालन करें। ऐसा करके, हम अपने शिष्यधर्म को निभा रहे होते हैं, अपनी श्रीगुरु के विद्यार्थी होने के उत्तरदायित्व का निर्वाह कर रहे होते हैं। हम इस बात का ध्यान रखते हैं कि श्रीगुरु का ज्ञान, उनका आलोक हमारे संसार में सर्वत्र फैले।

मेरा यह भी अनुभव रहा है कि सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर दी गई सिखावनियों के अध्ययन से, और इसके फलस्वरूप गुरु-शिष्य सम्बन्ध के विषय में गहन होते मेरे ज्ञान व अनुभव से, मुझे एक अन्य अभ्यास में भी सम्बल मिलता है जो कि सिद्धयोग पथ का एक मूलभूत अभ्यास है। दर्शन।

श्रीगुरु के दर्शन करना एक ऐसा अभ्यास है जिसे मैं हर रोज़ करती हूँ। मैं इस बात के लिए कृतज्ञ हूँ कि जीवन के इस समय में मुझे उस स्थान में रहकर सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त है जहाँ मेरी श्रीगुरु निवास कर रही हैं। साक्षात् रूप में श्रीगुरुमाई के दर्शन करना मेरे लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है—*साथ ही* मैं उस मार्गदर्शन पर भी बहुत ध्यान देती हूँ जो गुरुमाई जी ने इस विषय में दिया है कि कैसे हम अनगिनत तरीक़ों से श्रीगुरु के दर्शन कर सकते हैं।

दर्शन की अनुभूति अन्तर में होती है। मैं जानती हूँ कि कई सिद्धयोगी व नए साधक जब श्रीगुरु की दृष्टि का स्मरण करते हैं तो उन्हें श्रीगुरु के दर्शन की अनुभूति होती है—जब वे यह कल्पना करते हैं और महसूस करते हैं कि श्रीगुरु हमें जिस तरह देखती हैं तो उनका वह *देखना* कैसा होता है, इससे उन्हें दर्शन की अनुभूति होती है। जब वे श्रीगुरु के मौन में गहरे उतरते हैं, वह मौन जो उनकी अपनी आत्मा के मौन का ही दूसरा नाम है, तब उन्हें दर्शन की अनुभूति होती है, या फिर जब वे श्रीगुरु के प्रज्ञान का आवाहन करते हैं तब उन्हें दर्शन की अनुभूति होती है। उन्हें तब दर्शन की अनुभूति होती है जब वे मन ही मन कल्पना करते हैं कि वे श्रीगुरु के समक्ष हैं और जब वे अपने हृदय में श्रीगुरु की उपस्थिति से जुड़ते हैं जो कि सूक्ष्म होते हुए भी स्पष्ट रूप से महसूस होती है। श्रीगुरुमाई ने कहा है, "दर्शन करने का अभ्यास अपने आपमें एक शास्त्र है।"

श्रीगुरुगीता के इस श्लोक का स्मरण करके मैं समापन—या शायद *आरम्भ* करना चाहती हूँ क्योंकि पूरे माह के दौरान चलने वाले गुरुपूर्णिमा महोत्सव का शुभारम्भ करके हम ऐसा ही तो कर रहे हैं। मैंने यह श्लोक इसलिए चुना क्योंकि मैं यहाँ जिस बारे में बता रही हूँ, यह उसके लिए बिलकुल सटीक लगता है।

इस श्लोक में आदिगुरु, भगवान शिव देवी पार्वती से कहते हैं :

मन्त्रराजमिदं देवि गुरुरित्यक्षरद्वयम्।
स्मृतिवेदार्थवाक्येन गुरुः साक्षात्परं पदम्॥

हे देवी, दो अक्षर वाला यह शब्द, 'गुरु' महामन्त्र है।
श्रुति [वेद] और स्मृति भी कहती हैं कि
गुरु साक्षात् परम पद यानी परम तत्त्व हैं।[१]

© २०२६ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

[१] श्रीगुरुगीता, श्लोक १०७; स्वाध्याय सुधा, [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०२३], पृ. ५४। अंग्रेज़ी भाषान्तर © २०२६ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®।